रामाष्टक

नं. १०१८

127

ॐ श्रीरामायनमः ॥ ॐ अवदप्रीति
जधामकोहैयनिकट॥सिरजोगोरा
है॥दसरथनंदनअवधपतिकंदन
श्रीरामजीहरणाव्रलहै॥॥सती
तुसीताधानलछमण॥यतुषधा
रीसीतारामजीहै॥चित्रकूटतप

रा. १ लोककहियै ॥ श्रीरामजीशरण·
वत्सलहै ॥ ४ ॥ लंकापुरीछिनमाहि
जारी आज्ञाकारी हनुमानजीहै
रावणमारी विभीषणथाप्यो ॥ श्री
रामजीशरणवत्सलहै ॥ ५ ॥ सौलोक
लाज्जरावारपारटससहीपन

वर्तंके मै ॥ आदि अंत मध्य वो जदे
वो ॥ श्री रामजी शरण बल है ॥ ४ ॥
अष्ट सिद्धि नव निधि पाता ॥ भक्ति
मुक्ति वरदायकं ॥ ज्ञान ब्रह्म स्वरु
प संदर ॥ श्री रामजी शरण बल है ॥ ५
बलसे समहेस नारद कोटि अन

रा॰ सीमसुनिदेवता ॥ ब्रह्मा ॥ दिकसन
२ कादिकमावे । श्रीरामजीपूरण
ब्रह्महै ॥ ८ ॥ चेतनह्वोयमनमाहि
चेत्यो । जगतजगतलीलारची ॥
कनककुंडलगालहारमूका
श्रीरामजीपूरणब्रह्महै ॥ ७ ॥

भालतिलकविशाललोचनआनं
दकंदश्रीरामजीहै। सावरोसुरति
मधुरमूरति। श्रीरामजीशरणवत्सल
है॥ प॥ रामचरणकपटतितिमदिन
विमलोकसंगच्छति॥ श्रीरघुरामा
नेदश्रवंहतसामो। श्रीरामजीपुर

ण्ब्रह्मनैः॥१९॥ इति श्रीरामाष्टकं संपूर्णम्॥

